“जो मैं करता हूँ, उसे तुम अब नहीं जानते; परन्तु इसके बाद
समझोगे।”

(यूहन्ना 13:7)

जब यीशु ने अपने चेलों के पाँव धोए—जो सामान्यतः सबसे नीच सेवक का काम माना जाता था—तो पतरस चकित और संकोच में पड़ गया। पतरस की प्रतिक्रिया एक सामान्य मानवीय संघर्ष को दर्शाती है: जब परमेश्वर के मार्ग हमारी अपेक्षाओं से मेल नहीं खाते, तो उन्हें स्वीकार करना कठिन हो जाता है। उसने मानो यह कहा, “हे प्रभु, तू मेरे पाँव कभी न धोएगा!” (यूहन्ना 13:8)। परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, “जो मैं करता हूँ, उसे तुम अब नहीं जानते; परन्तु इसके बाद समझोगे” (यूहन्ना 13:7)।

यह घटना हमें एक गहरी सच्चाई सिखाती है: परमेश्वर का कार्य अक्सर हमारी तत्काल समझ से परे होता है। हमारे जीवन में परमेश्वर जो कुछ करता है, वह कई बार शुरू में समझ में नहीं आता। जिन पाठों और उद्देश्यों को वह हमारे भीतर पूरा कर रहा होता है, वे अक्सर केवल पीछे मुड़कर देखने पर—या “बाद में”—स्पष्ट होते हैं, जैसा कि यीशु ने कहा।

मसीही धर्मशास्त्र में इसे दैवी व्यवस्था (Divine Providence) कहा जाता है—अर्थात संसार और हमारे जीवन पर परमेश्वर का बुद्धिमान और सर्वोच्च नियंत्रण (रोमियों 8:28)। चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही पीड़ादायक या उलझन भरी क्यों न हों, परमेश्वर हमारे अंतिम भले के लिए कार्य कर रहा होता है।

एक विश्वास करने वाले के रूप में, आप ऐसे परीक्षाओं से गुजर सकते हैं जो अनुचित या समझ से बाहर लगती हैं। शायद आप पूछते हों:

मैं ही क्यों, जब पाप में जीने वाले लोग फलते-फूलते दिखते हैं? यह कठिनाई, यह बीमारी, या मेरे विश्वास के कारण यह ठुकराया जाना क्यों?
जब मैं विश्वासयोग्य होकर उसकी सेवा करता हूँ, तब भी परमेश्वर इन संघर्षों को क्यों होने देता है?

ऐसे ही प्रश्नों से अय्यूब भी जूझ रहा था, जब वह ऐसे दुःख से घिर गया जिसका कोई स्पष्ट कारण दिखाई नहीं देता था (अय्यूब 1–2)। उसकी कहानी हमें सिखाती है कि बिना उत्तर पाए भी परमेश्वर पर कैसे भरोसा रखा जाए।

यदि आप इस समय ऐसी ही परिस्थिति से गुजर रहे हैं, तो यह जान लें: परमेश्वर आपके चरित्र और आपके विश्वास को गढ़ रहा है (याकूब 1:2–4)। आपकी वर्तमान परीक्षाएँ भविष्य में एक गवाही बन सकती

हैं, जो दूसरों को उत्साहित करेंगी। या संभव है कि वे आपको किसी बड़े उद्देश्य के लिए तैयार कर रही हों।

यिर्मयाह 29:11 हमें परमेश्वर की भली योजनाओं की याद दिलाता है:

“यहोवा की यह वाणी है, कि मैं जानता हूँ कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ, वे कल्याण ही की हैं, हानि की नहीं; इसलिए कि मैं तुम्हें भविष्य और आशा प्रदान करूँ।”

यह पद हमें आश्वस्त करता है कि परमेश्वर के मन में अपने बच्चों के लिए भलाई और शांति की योजनाएँ हैं—चाहे वर्तमान मार्ग कितना ही कठिन क्यों न प्रतीत हो।

इसके अतिरिक्त, अंतकालीन आशा की वास्तविकता भी है—अर्थात अंतिम दिनों में परमेश्वर द्वारा की जाने वाली पूर्ण पुनर्स्थापना की निश्चित प्रतीक्षा (प्रकाशितवाक्य 21:4)। यह आशा बताती है कि अंततः परमेश्वर न्याय, चंगाई और अनन्त शांति स्थापित करेगा। उस दृष्टिकोण से पीछे मुड़कर देखने पर, आप उन परीक्षाओं में छिपी हुई बुद्धि को समझ पाएँगे जिन्हें आपने सहा।

हमें यह चेतावनी दी गई है कि कठिनाइयों का सामना करते समय कड़वे न बनें और निरंतर कुड़कुड़ाएँ नहीं (फिलिप्पियों 2:14)। इसके बजाय, हमें विश्वास में स्थिर रहने और परमेश्वर के समय तथा उसकी योजनाओं पर भरोसा रखने के लिए बुलाया गया है।

पौलुस हमें 1 कुरिन्थियों 13:12 में स्मरण दिलाता है:

“अब हमें आईने में धुँधला सा दिखाई देता है, परन्तु उस समय आमने-सामने देखेंगे; इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परन्तु उस
समय ऐसा पूरा जानूँगा, जैसा मैं जाना गया हूँ।”

यह पद दिखाता है कि इस जीवन में हमारा ज्ञान अधूरा है, परन्तु अनन्त जीवन में हमें पूर्ण समझ प्राप्त होगी, जब हम परमेश्वर को आमने-सामने देखेंगे। यह हमें धैर्य और विश्वास रखने के लिए प्रेरित करता है, जब उत्तर तुरंत नहीं मिलते।

इसलिए, अपनी दृष्टि यीशु पर लगाए रखें (इब्रानियों 12:2), उससे प्रेम करें और उसकी विश्वासयोग्यता पर भरोसा रखें। वह आपको कभी नहीं छोड़ेगा (व्यवस्थाविवरण 31:6)। स्तुति और आदर सदा-सर्वदा उसी के हैं।

“जो मैं करता हूँ , उसे तुम अब नहीं जानते ; परन्तु इसके बाद समझोगे। ”

आमीन।

कृपया इस उत्साहवर्धक संदेश को दूसरों के साथ साझा करें।

प्रार्थना , आराधना कार्यक्रम , सलाह या प्रश्नों के लिए संपर्क करें :

 +255693036618 या +255789001312

Share on:
WhatsApp

Print this post